कृषि वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों ने किया नैदानिकी भ्रमण

जगदलपुर 7 सितम्बर (सन्यूस) इंदिरा गांधी कृषि विश्व विद्यालय के अन्तर्गत कार्यरत शहीद गुण्डाधुर कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र, जगदलपुर के अधिष्ठाता डॉ. एस.सी. मुखर्जी, उद्यानिकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता, डॉ. राजीव गुप्ता, कार्यक्रम समन्वयक, कृषि विज्ञान केन्द्र, डॉ. एस.सी. यादव के साथ आर.के. कश्यप, संयुक्त संचालक कृषि, बस्तर संभाग के साथ एक वैज्ञानिकों के दल का गठन कर कोण्डागांव जिले के फरसगांव विकासखंड के ग्राम चरकई, सीहलाई एवं कुल्हाड़गांव में 7 सितम्बर को नैदानिकी भ्रमण किया गया।

वैज्ञानिकों के इस दल में डॉ. डी.एस. ठाकुर, वरिष्ठ वैज्ञानिक, डॉ. आदिकान्त प्रधान एवं डॉ. प्रफुल्ल साव के साथ-साथ श्री बघेल, श्री शर्मा एवं श्री राणा आदि वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी तथा ग्रामीण विकास अधिकारी भी सम्मिलित थे।

नैदानिकी भ्रमण के दौरान ग्राम चरकई में धान फसल को रासायनिक दवा से नुकसान होना देखा गया तथा ग्राम कुल्हाड़गांव में धान में झुलसा रोग का प्रकोप देखा गया जिसके लिए कृषकों को ट्राइसाइकलाजोल या टिल्ट दवा का प्रयोग की सलाह दी गई साथ ही युरिया का प्रयोग रोग नियंत्रण के पश्चात करने की सलाह दी गई। साथ ही ग्राम उसरीबेड़ा में धान फसल में अन्य किस्म के बीजों के मिश्रण के स्रोत का भी अवलोकन किया गया।

नैदानिकी भ्रमण के दौरान श्री सार्दुल, वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी एवं कृषि विभाग के अन्य कर्मचारियों के साथ-साथ कृषक रामधर, पनकू, तुलाराम ग्राम चरकई एवं कृष्ण ठाकुर उसरीबेड़ा के साथ अन्य 35 कृषक भी उपस्थित थे जिन्होंने धान फसल में आयी समस्याओं से अवगत कराया तथा वैज्ञानिक दल द्वारा निदान के उपाय बताये।

कृषि वैज्ञानिकों ने किया खेतों का अवलोकन

जगदलपुर 6 सितम्बर (सन्यूस) कृषि विज्ञान केन्द्र, कुम्हरावंड, जगदलपुर के कार्यक्रम समन्वयक, डॉ.एस.सी.यादव के मार्गदर्शन में कोण्डागांव जिले के ग्राम पंचायत बोलबोला, बड़ेभिरावंड, बड़ेबेंदरी, बड़ेकनेरा एवं भगदेवा में खरीफ 2013-14 में धान, उड़द, हल्दी, अदरक, रागी एवं सब्जी प्रदर्शन के अंतर्गत कृषकों के खेतों पर उन्नत प्रजाति एवं कृषक तकनीक का विस्तारपूर्वक अवलोकन किया गया। साथ ही साथ धान में तनाछेदक, झुलसा, बंकी, इत्यादि कीट व्याधी के नियंत्रण के लिए नवीनतम रासायनिक दवा एवं धान की उन्नत किस्मों जैसे कर्मामासुरी, एम.टी.यू.1010, एम.टी.यू.1001 में अधिकतम कंसे के लिएधान में खरपतवार नाशक जैसे बिसपायरीबेक सोडियम दवा का छिड़काव एवं कतार रोपाई धान में पैडी-कोनो वीडर चलाने की सलाह दी गई। हरित क्रांति विस्तार योजना के अंतर्गत कृषि विभाग द्वारा जिला कोण्डागांव में धान फसल में दिये गये। प्रदर्शनों का अवलोकन एवं कृषकों की रोग, कीट व्याधी उपायों एवं अधिकतम उत्पादन के लिए कृषि की नवीनतम जानकारी खेतों में ही कृषक परिचर्चा द्वारा प्रदान की गई। उपरोक्त भ्रमण में कार्यक्रम समन्वयक, डॉ.एस.सी. यादव, आर.एस. राजपूत, तोषण ठाकुर, श्रीमती किशनबती एवं कृषक दल सम्मिलित हुए।

कम समय में अधिक लाभ देने वाली फसल मूली की उन्नत काश्त

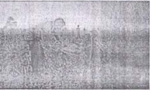

मूली कम समय में होने वाली एक कैश फसल है। इसे बहुत ही कम समय में (30-34) दिनों में तैयार कर अधिक लाभ लिया जा सकता है। इस फसल को अंतवर्ती फसल के रूप में अन्य सब्जियों की दो कतार के मध्य में अथवा मेड़ों पर या दो फसलों के बीच की अवधि में लगा कर अच्छी आमदनी प्राप्त की जा सकती है। यह ठण्डे मौसम की फसल है किन्तु इसे वर्ष के प्रत्येक महीने में लगाया जा सकता है। यह ठण्डे तासीर वाली सब्जी है किन्तु यह बवासीर, पीलिया व जिगर की बीमारियों को नियंत्रित करने के लिये उपयोगी होती है। साथ ही साथ इसमें कई प्रकार के विटामिन जैसे - ए व सी तथा खनिज लवण फास्फोरस, पोटेशियम, कैल्शियम आदि भी पाए जाते हैं। इस प्रकार से शीघ्र फसल तैयार होने के साथ-साथ इसके कई औषधीय गुण भी होते हैं जो इसकी खेती को और अधिक प्रोत्साहित करते है।

19th September 2013

जलवायु, भूमि व खेती की तैयारी:- मूली को वर्ष भर उगाया जा सकता है। किन्तु इसके जड़ों के विकास के लिए 10-15 डिग्री सेल्सियस तापमान की आवश्यकता होती है। इसी कारण गर्मी की फसल में जड़ों का विकास अच्छी तरह से नहीं हो पाता व जड़े छोटी व चरपराहट युक्त हो जाती है। इसीलिए इसे गर्मी से जमीन से जल्दी निकाल लेना चाहिए।

इसकी खेती के लिए हल्की बलुई दोमट मिट्टी सर्वश्रेष्ठ होती है। व जड़ों के विकास के लिए मिट्टी भुरभुरी तथा कार्बनिक पदार्थ युक्त होना चाहिए।

खेती की तैयारी:- इसकी खेती के लिए खेत की जुताई के समय ही मिट्टी से पिछली फसल के सभी अवशेष निकालकर खेतों को मिट्टी पलटने वाले हल से पहली जुताई कर दूसरी व तीसरी बार देशी हल से जोत कर पाटा चलाए।

बीज दर व बुआई का समय:- इसकी बुआई करने के लिए 30-45 से.मी. के अंतराल पर मेड़ बना कर उस पर 8-10 से.मी. की दूरी पर बुआई करें। या समतल क्यारी में 30 से.मी. की दूरी पर हो और 2 से.मी. गहराई पर बीज को लगाए।

उन्नत किस्म:- जापानी व्हाइट, पूसा चेतकी, काशी श्वेता, हिसार मूली न.-1, महिको-11

खाद व उर्वरक:- 10 टन प्रति एकड़ अच्छी सड़ी हुई गोबर खाद भूमि तैयारी के समय मिलाए। 44 किलो/एकड़ यूरिया, 65 किलो एस.एस.पी. व 17 किलो एम.एस.पी. प्रति एकड़ की दर से लगाते समय भूमि में मिलाए।

<u>कीट व रोग नियंत्रण:-</u>

माहू:- यह पनीले हुए रंग का छोटा कीट होता है। जो हजारों की संख्या में पत्तों पर चिपका रहता है। और पत्तियों से रस को चूस कर पत्तियों को सूखा देता है। इसके नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोरोप्रिड या मिथाइल डेमेटान कीट नाशक का 1 मि.ली. प्रति ली. पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

रोयेंदार सूंडी:- यह पत्तियों में छेद कर उन्हें खाने का कार्य करती है। जिससे पत्तियाँ जालीदार हो जाती हैं।

इसके नियंत्रण के लिए क्लोरपायरीफास 50 प्रतिशत का 1 मि.ली. प्रति ली. पानी में डालकर छिड़काव करें।

झुलसा रोग:- यह रोग जनवरी से मार्च तक अधिक दिखाई देता है पत्तियों पर धब्बे गहरे काले रंग के दिखाई देने लगते है। इसके नियंत्रण के लिए मेन्कोजेब फफूंदनाशी का 2.5 ग्रा. प्रति किलो बीज की दर से बीज उपचारित करें या 2 ग्रा. प्रति ली. पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

बहुमुखी:- यह बीमारी नहीं बल्कि एक प्रकार की दैहिक व्याधि होती है। जिसमें जड़े नीचे से कई शाखाओं में बट जाती है। इसका मुख्य कारण मृदा का भारीपन या कठोर होना, या पूरी तरह से अपघटित गोबर खाद का उपयोग ना करना। उपचार के लिए पूरी तरह से सड़ी हुई गोबर खाद का उपयोग करें। एवं छोटे जड़ वाली किस्म पूसा चेतकी, काशी श्वेता का चुनाव करें।

उपज:- औसत उपज 70-80 क्विंटल प्रति एकड़ प्राप्त होती है।

-श्रीमती गुंजन झा

-डॉ.एस.सी.यादव

-श्री तोषण ठाकुर

कृषि प्रदर्शनी आयोजित

जगदलपुर। इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय रायपुर एवं कृषि विभाग छग शासन के संयुक्त तत्वाधान में राष्ट्रीय कृषि विकास योजनांतर्गत कृषि विज्ञान केंद्र जगदलपुर के द्वारा सोमवार को विकासखंड बकावंड के ग्राम बारदा में वृहद स्तरीय एक दिवसीय किसान मेला सह प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। किसान मेला में कृषकों को कृषि की उन्नत तकनीक के विषय जानकारी दी गई। उक्त जानकारी कार्यक्रम समन्वयक ने दी है।

19th September 2013

बारदा में वृहद किसान मेला सह कृषि प्रदर्शनी आयोजित

कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों को दी आवश्यक जानकारी

जगदलपुर 18 सितम्बर (सन्यूस) कृषि विज्ञान केन्द्र, जगदलपुर के द्वारा 16 सितम्बर को वि.ख. बकावंड के अंतर्गत ग्राम पंचायत बारदा में वृहद् स्तरीय एक दिवसीय किसान मेला सह प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. सुभाऊ कश्यप, विधायक, बस्तर विधानसभा क्षेत्र रहे। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. एस.सी. मुखर्जी, अधिष्ठाता, श.गु.कृ.महा. एवं अनु. केन्द्र, जगदलपुर के साथ नारायण बिसाई, निदेशक, छ.ग. राज्य कृषि एवं बीज विकास निगम, पार्वती कश्यप, सदस्या, प्रबंध मंडल, इं.गां.कृ.वि.वि. .एवं सभापति, उपस्थित रहे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. आर. गुप्ता, अधिष्ठाता, उद्यानिकी महा विद्यालय, जगदलपुर ने की। किसान मेला में कृषकों को कृषि की उन्नत तकनीक की जानकारी देने हेतु श.गु.कृ.महा. एवंअनु. केन्द्र, जगदलपुर के वैज्ञानिक डॉ. डी.एस. ठाकुर, डॉ. एस. अग्रवाल, डॉ. आदिकांत प्रधान, डॉ. देवशंकर नाग, डॉ. मनीष सिंग एवं कृषि विज्ञान केन्द्र के कार्यक्रम समन्वयक डॉ. एस.सी. यादव उपस्थित रहे। कार्यक्रम को गति प्रदान करते हुए डॉ. एस.सी. मुखर्जी ने खरीफ फसलों में समन्वित कीट प्रबंधन, डॉ. प्रधान ने खरीफ फसलोत्पादन, डॉ. नाग ने कदिय फसलों की खेती, डॉ. अग्रवाल ने नारियल एवं काजू के उत्पादन एवं डॉ. सिंग ने बीज उपचार एवं मिट्टी परिक्षण की उपयोगिता के वैज्ञानिक तरिके के बारे में कृषकों को विस्तृत जानकारी दिया। किसान मेला के उक्त कार्यक्रम में मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों के द्वारा बहुउपयोगी कृषि यंत्र, रबी फसलों की उन्नत बीज एवं मत्स्य बीज का वितरण चयनित कृषकों को किया गया।

जिसके अंतर्गत 3 कृषकों को स्प्रे पंप, 5 कृषकों को पेडी विडर, 1 स्व.सहायता समूह को मत्स्य बीज, 2 कृषकों को सब्जी बीज कीट एवं मटर बीज तथा 6 कृषकों को चना बीज, 5 कृषकों को सायकल व्हील हो एवं 5 कृषकों को हेण्ड हो वितरित किया गया।

ग्राम पंचायत बारदा में आयोजित इस वृहद स्तरीय किसान मेला में कृषि की वैज्ञानिक एवं नवीन तकनिकी जानकारी को प्राप्त करने की कृषकों की उत्सुकता कार्यक्रम में उनकी 1500 से अधिक संख्या में उपस्थिति से साफ झलक रही थी जिसे केन्द्र के वैज्ञानिकों ने पूरा किया।

सितम्बर की बारिश पर टिकी धान की पैदावार

- गभोट के लिए लाभप्रद
- औसत वर्षा भी नहीं

जगदलपुर cityreporter@patrika.com

सितम्बर में अब किसानों के पास महज 10 दिन ही शेष रह गए हैं। इस दौरान यदि पर्याप्त बारिश नहीं हुई, तो इस साल धान की पैदावार कम होने के आसार हैं। वैज्ञानिकों और कृषि विभाग के अधिकारियों के अनुसार सितम्बर की बारिश पर धान की पैदावार टिकी हुई है।

सितंबर में पर्याप्त वर्षा नहीं होने की दशा में कृषकों को निराशा का सामना करना पड़ सकता है। हालांकि अगस्त तक जिले में माहवार जितनी पानी की आवश्यकता होती है, उसके अनुरूप वर्षा हो गई है। अब धान में बाली आने के पहले जितना पानी चाहिए, उस पर संकट छाया हुआ है। वैज्ञानिकों और कृषि विभाग के अधिकारियों के मुताबिक इस साल मानसून के बस्तर में जल्दी दस्तक देने की वजह से जून से लेकर अगस्त तक काफी बारिश हो चुकी है। इतना पानी फसल के बढ़ने के लिए पर्याप्त होता है। पिछले वर्ष की तुलना में इस वर्ष इन तीन माह में अच्छी वर्षा हुई है। लेकिन सितम्बर में अब अब तक फसल के लिए आवश्यक औसत वर्षा भी नहीं हुई है। कृषि विभाग के अनुसार सम्भाग के सभी जिलों में सितम्बर में औसत 350 मिमी बारिश होनी आवश्यक है। ऐसा न होने पर खड़ी फसल को काफी नुकसान पहुंच सकता है। धान की बालियां कम होने तथा पौधों में कीट व्याधि जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

तीन सप्ताह में भी औसत बारिश नहीं

इस वर्ष मानसून काफी पहले बस्तर पहुंच गया है। इसके चलते जून, जुलाई और अगस्त में काफी बारिश हुई। इस दौरान प्रत्येक जिले में औसत वर्षा क्रमशः 460 मिमी, 266.1 मिमी तथा 351 मिमी दर्ज की गई। जो शुरुआती फसल के अनुसार पर्याप्त है। लेकिन सितम्बर में तीन सप्ताह बीत जाने के बाद भी फसल के लिए जरूरी औसत वर्षा भी नहीं हुई है। सितम्बर में अब तक औसत 75 मिमी बारिश हुई है, जो फसल के लिए बेहद कम है। अच्छी बारिश नहीं होने की सूरत में पैदावार प्रभावित हो सकती है। फिलहाल इस साल धान के रकबे में करीब 4 सौ हैक्टेयर की बढ़ोतरी हुई है।

इस साल पर्याप्त बारिश हुई है। सितम्बर में पानी खेतों में कम है। धान की फसल के लिए प्रत्येक जिले में औसत 14 सौ से 16 सौ मिमी पानी की आवश्यकता होती है। अब तक करीब [illegible] सौ मिमी बारिश हुई है। फिलहाल फसल अच्छी स्थिति में है। इस माह में धान

अवस्था) में होता है। पौधे को पोषण नहीं मिल पाता और बालियों में दाने कम बनते हैं। इसका सीधा असर उत्पादन में पड़ता है। सितम्बर के अंत तक भी यदि पर्याप्त [illegible] फसल में बम्पर प्रोडक्शन की उम्मीद है।

बढ़ेगी उपज

बारिश इस वर्ष पर्याप्त है, सितम्बर में अच्छी बारिश हुई, तो धान का [illegible] 14 से 15 प्रतिशत बढ़ने की सम्भावना है।

20th September 2013

बस्तर भास्कर

जगदलपुर • कांकेर • दंतेवाड़ा • कोंडागांव | रायपुर, शनिवार, 21 सितंबर, 2013 | • केशकाल • नारायणपुर • भानुप्रतापपुर • बीजापुर

किसान मेला सह कृषि प्रदर्शनी का आयोजन

[illegible] इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, एवं कृषि विभाग के संयुक्त तत्वावधान में राष्ट्रीय कृषि विकास योजनांतर्गत, कृषि विज्ञान केंद्र ने ब्लाक बकावंड की पंचायत [illegible] एक दिवसीय किसान मेला सह प्रदर्शनी लगाया। मुख्य अतिथि विधायक डॉ. सुभाऊ कश्यप थे। कृषि की उन्नत तकनीक की जानकारी देने हेतु डॉ. [illegible] ठाकुर, डॉ. एस [illegible], डॉ. आदिकांत प्रधान, डॉ. [illegible] नाग, डॉ. मनीष सिंग, [illegible] डॉ. एसडी यादव उपस्थित थे। डॉ. मुखर्जी ने खरीफ फसलों में [illegible] कीट प्रबंधन डॉ. प्रधान ने खरीफ [illegible] डॉ. नाग ने [illegible] फसलों की खेती, डॉ. [illegible] [illegible]

धान की बालियां देखकर किसान हुए खुश

21st September 2013

खेती-किसानी

फसल अच्छी होने के चलते 57 करोड़ रुपए का कर्ज समय पर पटाने की बात किसान कह रहे हैं

जिले में इस साल हुई पर्याप्त बारिश का असर धान की फसल पर बड़े पैमाने पर दिखाई दे रहा है।

भास्कर न्यूज | जगदलपुर

जिले के एक लाख 21 हजार हजार हेक्टेयर में धान की खेती की गई है। कुछ ब्लाकों में लगाई गई धान की फसल में बालियां निकल आई हैं। इसके चलते किसान समय पर फसल तैयार होने और उत्पादन बढ़ने की उम्मीद जता रहे हैं।

समय पर बारिश और खाद किसानों को मिलने से कृषि विभाग भी इस साल धान का उत्पादन बढ़ने की संभावना जता रहा है। इस साल जिले में 1221 मिमी बारिश हुई जो पिछले साल से करीब 321 मिमी कम है, लेकिन इसका असर नहीं दिख रहा है। पिछले कुछ दिनों से हो रही बारिश को भी फसल के लिए उपयोगी माना जा रहा है।

पंजीयन 15 हजार, कर्ज 57 करोड़ : धान बेचने पंजीयन कराना अनिवार्य होने से किसानों का समितियों में पहुंचना जारी है। जिला सहकारी बैंक के मुताबिक जिले की सभी समितियों में अब तक 15 हजार 541 किसानों ने पंजीयन कराया है। बैंक के मुख्य पर्यवेक्षक केशन पांडे ने बताया इस साल धान के साथ ही मक्के की फसल अच्छी होने की संभावना के चलते वर्ष 2013-14 में खरीफ सीजन के तहत 11 हजार 761 किसानों ने एक फीसदी ब्याज पर 57 करोड़ रुपए का कर्ज लिया है। इनमें सबसे अधिक बस्तर, बकावंड और जगदलपुर ब्लाक के किसान हैं। उन्होंने बताया किसानों को दिए गए कर्ज को बैंक समय पर वसूली कर लेगा।

"अभी देवड़ाटी की धान की फसल में बालियां आ गई हैं। धान और मक्के की फसल इस बार जिले में काफी अच्छी है। जिन ब्लाकों में धान की फसल पर कीट-व्याधियों का प्रकोप हुआ था, समय रहते उस पर नियंत्रण पाने की कोशिश की जा रही है।"

एपी पटेल, उपसंचालक कृषि

समर्थन मूल्य से खुश

कृषक चिंतामणी बघेल ने बताया बारिश के चलते इस साल धान की फसल अच्छी है। जिसके चलते किसान जिला सहकारी बैंक से लिए कर्ज को समय पर पटा देंगे। धान का समर्थन मूल्य बढ़ने के कारण भी किसान खुश हैं। रामप्रसाद मौर्य, गोपाल कश्यप व तुलाराम कश्यप ने बताया धान का समर्थन मूल्य बढ़ने और फसल अच्छी होने से वे खुश हैं। खेती किसानी में किसानों की बढ़ती सहभागिता धान और मक्के का रकबा पिछले साल की तुलना में बढ़ा है।